# उत्तर प्रदेश में असहयोग आन्दोलन का स्वरूपः एक नूतन विमर्श

डॉ. प्रतिभा सिंह
डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी
मध्यकालीन एवं आधुनिक भारतीय इतिहास विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

भारतीय राजनीति के इतिहास में उत्तर–प्रदेश की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण रही है। चाहे प्रदेश की कुल जनसंख्या का सवाल हो या संसद में सांसदों की संख्या, उत्तर प्रदेश का स्थान सर्वोपरि है। सिर्फ राजनीति ही नहीं संस्कृति, इतिहास व सामाजिक–आर्थिक, भौगोलिक दृष्टि से भी यह प्रान्त भारत में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। सितम्बर, 1920 में असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रम पर विचार करने के लिए कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) में 'कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन' का आयोजन किया गया। इस अधिवेशन की अध्यक्षता लाला लाजपत राय ने की। इसी अधिवेशन में कांग्रेस ने पहली बार भारत में विदेशी शासन के विरुद्ध सीधी कार्यवाही करने, विधान परिषदों का बहिष्कार करने तथा असहयोग व सविनय अवज्ञा आन्दोलन को प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। कलकत्ता अधिवेशन में गांधी जी ने प्रस्ताव पेश करते हुए कहा कि, "अंग्रेज़ी सरकार शैतान है, जिसके साथ सहयोग सम्भव नहीं। अंग्रेज़ सरकार को अपनी भूलों पर कोई दुःख नहीं है, अतः हम कैसे स्वीकार कर सकते हैं कि नवीन व्यवस्थापिकाएँ हमारे स्वराज्य का मार्ग प्रशस्त करेंगी। स्वराज्य की प्राप्ति के लिए हमारे द्वारा प्रगतिशील अहिंसात्मक असहयोग की नीति अपनाई जानी चाहिए।"

गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन शुरू करने के पीछे सबसे प्रमुख कारण था अंग्रेजी सरकार की अस्पष्ट नीतियाँ। सरकार के सुधारों से जनता असंतुष्ट थी, सर्वत्र आर्थिक संकट छाया हुआ था तथा महामारी और अकाल फैला हुआ था। ऐसे समय में अंग्रेजी सरकार द्वारा 1919 को रोलेट एक्ट प्रस्तुत किया गया जो भारतीयों की नज़र में एक काला कानून था। रोलेट समिति की रिपोर्ट के विरुद्ध हर जगह विरोध हो रहे थे। इस एक्ट के विरोध में पूरे देश में हड़ताल करने का निश्चय किया गया। जब भारतीय विधान सभा में उस विधेयक पर चर्चा हो रही थी, गाँधीजी वहाँ दर्शक के रूप में उपस्थित थे।

## असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि

ऐसे दौर (1919) में जब जन असंतोष व्यापक रुप धारण कर रहा था और एक प्रभावी नेतृत्व उसे दिशा देने के लिए मंच पर आ गया था। साम्राज्यवादी शासन ने ऐसे कदम उठाए जिन्होंने उसके विरुद्ध संघर्ष करना अनिवार्य कर दिया। यह कदम थे खिलाफत के प्रश्न पर मुस्लिम विरोधी रुख, रोलट कानून ( जिससे प्रशासन को किसी व्यक्ति को गिरफ्तार करने और बिना मुकदमे के बंदे क्रम में रखने की अनुमति थी) का पारित किया जाना। जलियांवाला बाग( जहां जनरल डायर ने निहत्थे लोगों पर बिना चेतावनी दिए गोली चलाकर सहस्त्रों लोगों को मारा अथवा जख्मी कर दिया) का नृशंस हत्याकांड आदि ने असहयोग आंदोलन को जन्म दिया और असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार की

जिस वक्त साम्राज्यवाद धराशायी होने लगा था, ज़ार जैसे शक्तिशाली सम्राटों के राज मुकुट जमीन पर लोटने लगे थे, जब दुनिया के छठे हिस्से की राजसत्ता पर कब्जा कर सर्वहारा ने विश्व क्रांति का बिगुल बजा दिया था और साम्राज्यवादी लुटेरों पर मार्मिक आघात करने के लिए पराधीन देशों की जनता का आह्वान कर रहा था, उस वक्त ब्रिटिश साम्राज्य, सम्राट और राज सिंहासन के प्रति स्वामि भक्ति का यह प्रस्ताव एनी बेसेंट जैसे नेताओं के चरित्र को अच्छी तरह उजागर करता था।

जब सारी दुनिया में क्रांति की लहर फैली हुई थी और पराधीन देशों की जनता आगे बढ़कर साम्राज्यवादी लुटेरों पर वार कर रही थी, भारतीय जनता भी राष्ट्रीय मुक्ति की क्रांति का रास्ता अपना रही थी। उसे एक क्रांतिकारी नेतृत्व की आवश्यकता थी, उसे लेनिन जैसे एक नेता की जरूरत थी। गांधी समेत कांग्रेस के नेता ऐसा नेतृत्व देने में बुरी तरह असफल रहे। अपने व्यवहार से उन्होंने सीख दिया कि, वे क्रांतिकारी नहीं, महज सुधारवादी हैं।

1920–22 के जमाने के किसान आन्दोलन का तीसरा बड़ा केन्द्र संयुक्त प्रान्त आगरा और अवध था। इस किसान आन्दोलन का चरित्र भी साम्राज्यवाद–विरोधी और सामन्त–विरोधी था। यहां तक कि किसानों ने भी राष्ट्रीय मुक्ति क्रांति का सही रास्ता अपनाने की कोशिश की। साम्राज्यवादियों के विरूद्ध भयंकर सशस्त्र संग्राम संयुक्त प्रान्त के किसानों की परम्परा रही हैं। फसल मारे जाने के साथ अकाल और महामारी ने राष्ट्रीय आन्दोलन की फिजा के साथ मिलकर गरीब किसानों को हथियार उठाने की प्रेरणा दी।

संयुक्त प्रान्त में कांग्रेस के असहयोग आन्दोलन की भी प्रधान शक्ति किसान थे। कांग्रेस के स्वयं सेवक दल में हजारों में भरती होकर उन्होने पूरे राष्ट्रीय आन्दोलन को शक्तिशाली बनाया था। इसके साथ ही उन्होंने लगानबंदी आदि का भी रास्ता अपनाया था। फरवरी, 1922 में किसान आन्दोलन संयुक्त प्रान्त के उत्तर–पूर्वी भाग में फैल गया। ब्रिटिश समाचार पत्रों ने किसान आन्दोलन के इस प्रसार के समाचार को शीर्षक दिए – ''क्रांति भारत के उत्तरी भाग में फैल रही है'', 'आन्दोलन पूरब में फैल रहा है'। किसान आन्दोलन के इस प्रसार के बारे में उन्होंने संपादकीय भी लिखे।

5 फरवरी, 1922 को गोरखपुर में चौरीचौरा की घटना घटी। लगभग दो हजार स्वयंसेवकों और किसानों ने जुलूस निकाला था। उसे तितर–बितर करने के लिए पुलिस ने उस पर गोली चलाई। जब तक सारी गोलियां समाप्त नहीं हो गई तब तक वे गोली चलाते रहे, इससे कई आदमी हताहत हुए। किसानों ने तुरंत जबाब दिया। पुलिस वाले भागकर थाने में जा छिपे और दरवाजा बंद कर लिया। किसानों ने थाने को जा घेरा और आग लगा दी। सब पुलिस वाले मारे गए। चौरीचौरा और गोरखपुर के बीच की रेलवे लाइन उखाड़ दी गई। यही वह घटना है जिसको आधार बनाकर गांधी जी ने पूरा असहयोग आंदोलन वापस ले लिया था।

1920–22 में किसान आंदोलन सिर्फ पंजाब, माालावार और संयुक्त प्रांत तक ही सीमित न था। अन्य प्रदेशों के किसान भी लड़ाई के मैदान में उतरे। राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल होने के साथ–साथ उन्होंने अपना आंदोलन भी तेज किया। 1922 की गर्मियों में बंगाल के कुछ हिस्सों के किसानों ने सरकार और जमींदारों को मालगुजारी देने से इन्कार किया। उन्होंने जमींदारियों की कचहरियां लूटीं और उनके गेहूँ के खेतों में आग लगाई। आंध्र के गंटूर में किसानों ने लगानबंदी का आंदोलन शुरु कर दिया लेकिन गांधीजी ने फरमान जारी कर उसे बंद करवा दिया।

दिसम्बर, 1920 के कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन कांग्रेस के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण है। उसने कांग्रेस के रूप में आमूल परिवर्तन कर दिया और उसे भारतीय जनता की कांग्रेस बना दिया। इस अधिवेशन के अध्यक्ष विजय राघवाचार्य थे। इस अधिवेशन में असहयोग के प्रस्ताव को दोहराया ही नहीं गया, बल्कि उसके कार्यक्रम के अंतर में एक धारा जोड़ दी गई और संकेत दिया गया कि अगर जरुरत पड़ी तो कर देने से इन्कार किया जा सकता है। इस अधिवेशन में भी इस प्रस्ताव के कई अंशों का प्रबल विरोध हुआ था, किन्तु अंत में वह प्रबल बहुमत से पास हो गया।

19920–21 में गोरखपुर में कांग्रेस का संगठन गावँ–गाँव फैल गया था। और वहाँ विदेशी वस्त्रों की होलियों का तूफान उठ गया था। शहर–शहर नहीं, गाँव–गाँव में विदेशी वस्त्र फूंके गये थे। स्वयं सेवक घर–घर घूमते, लोग खुशी–खुशी उन्हें अपने कपड़े देते और तब होली जलती। इन होलियों में अंग्रेजी हुकूमत का प्रताप ही स्वाहा होने लगा, तो सरकार ने हुक्म दिया कि विदेशी वस्त्रों की होली जिस ताल्लुकेदार या जमींदार के गावं में होगी, उस पर मुकदमा चलाया जायेगा।

उत्तर प्रदेश ने अपनी शालीनता और गरिमा नहीं खोई । असहयोग आन्दोलन उत्तर प्रदेश की ही एक घटना के कारण वापस लिया गया था और पंडित मोतीलाल नेहरू ने जेल से ही गाँधी जी को अपने खत में बहुत भला–बुरा कहा था। यह दो मित्रों का आपसी व्यवहार था, पर जेल से छुटने पर इलाहाबाद की एक सभा में गांधी जी द्वारा मोर्चा बदलने का समर्थन करते हुए मोतीलाल जी ने कहा– ''आन्दोलन खत्म नहीं किया गया, स्थगित किया गया है। हवा का रूख बदलने के कारण हमें अपने पालों को भी बदलना पड़ सकता है। सामने की चट्टानों और खतरों से बचने के लिए हमें अपने रास्तों में भी कुछ तबदीली करनी पड़ सकती है। यहाँ तक की कोहरे के घिर आने पर हमें उस समय तक लंगर भी डाले रखना पड़ सकता है, जब तक कि धुन्ध थोड़ी साफ न हो जाये, लेकिन इस बात का कोई सवाल ही नहीं उठता कि हम अपनी मंजिल को बदल दें उस मंजिल तक पहुंचने के लिए हमने जिस उम्दा जहाज को अपनाया है, उसे ही छोड़ दें।

असहयोग आन्दोलन के प्रारम्भ एवं बन्द किये जाने सम्बन्धी विकास क्रम का विश्लेषण किया जाय, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि, असहयोग आन्दोलन ने राष्ट्रीय मुक्ति के लिए अद्भूत एकता की मिशाल कायम किया। इस आन्दोलन में केवल कांग्रेस तथा कंग्रेस के स्वयं सेवक ही नहीं, बल्कि किसान, प्रबुद्ध वर्ग और अति–सामान्य जनता ने भी सहभागिता किया। इसी तरह भारतीय इतिहास में पहली बार हिन्दू–मुस्लिम एकता की अद्भूत समायोजन भी इसी समय उपस्थित हुआ। इन सारी परिस्थितियों से अंग्रेजी शासन–प्रशासन सहम सा गया था और गाँधी जी द्वारा जनता से किया गया वादा कि ''भारत एक साल के अन्दर आजाद हो जायेगा'', चरितार्थ होने के निकट पहुँचता जा रहा था।

## निष्कर्ष

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सबसे महत्त्वपूर्ण कांग्रेस का उदय था। इसके उदय से ही इसमें उत्तर प्रदेश की सहभागिता रही। उत्तर–प्रदेश न केवल कांग्रेस और गाँधीवादी विचारधारा के साथ

मिलकर राष्ट्रीय आन्दोलन में सहभागिता किया, बल्कि इसकी क्रांतिकारी आन्दोलन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान उत्तर प्रदेश में प्रथम महायुद्ध के दौरान क्रांतिकारियों का अड्डा बनारस था। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की घटनाओं में गाँधीजी का कांग्रेस में आगमन आन्दोलन को एक नवीन आयाम प्रदान करने वाला सिद्ध हुआ। सन् 1915 ई0 में महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका से भारत आये। महात्मा गाँधी यह भी जानते थे कि भारतीयों में एकता स्थापित करने के लिए हिन्दू व मुसलमानों के बीच की दूरी को समाप्त करना आवश्यक है। महात्मा गाँधी भारतीयों की समस्या का समाधान करने के लिए किसी प्रकार का आन्दोलन करने से पूर्व हिन्दू व मुसलमानों को हर हालत में निकट लाना चाहते थे। 'सत्य पर अटल रहना ही सत्याग्रह है।' सत्याग्रह असत्य को सत्य से और हिंसा को अहिंसा से जीतने का नैतिक शस्त्र है। इसका उद्देश्य धैर्यपूर्वक कष्ट सहकर, अहिंसात्मक एवं उचित तरीकों से सत्य को प्रकट करना, भूलों को सुधारना एवं भूल करने वालों का हृदय परिवर्तन करना है।

गाँधी का साध्य और साधनों की एकरूपता में विश्वास था। स्थायी अच्छाई कभी भी अनैतिक साधनों से प्राप्त नहीं की जा सकती। अच्छे साध्य के लिए साधन सदैव उचित व नैतिक होना चाहिए। अहिंसा, सत्याग्रह की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है, अतः सत्याग्रह पूर्णतः हिंसा का विरोध करता है क्योंकि हिंसा अनैतिक है। असहयोग से तात्पर्य है कि सरकार यदि जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप कार्य नहीं करती, जनता के कष्टों व शिकायतों को दूर करने का प्रयास नहीं करती या फिर जनता के अनुसार भ्रष्ट हो चुकी है, तो उसके साथ सहयोग न करना। असहयोग का उद्देश्य है अन्यायी सरकार से स्वयं को मुक्त कर पवित्र करना व उससे सहयोग समाप्त करना।

## संदर्भ ग्रंथ सूची


- सोर्स मैटीरियल फॉर ए हिस्ट्री आफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इण्डियाः खण्ड 2 1885–1920, गवर्नमेंट सेंट्रल प्रेस, बम्बई, 1958.
- कटिहार, भगवान स्वरूप (संपा0), उत्तर प्रदेश, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश, 1999, पृ0 2.
- रिपोर्ट ऑफ दि कमीशन एप्वाइंटेड बाइ दि पंजाब सब कमेटी ऑफ दि इंडियन नेशनल कांग्रेस, भाग–2, बम्बई, 1920, पृ0 10–11.
- पोलक, एच0एस0, महात्मा गांधी, पृ0 153.

- यंग इण्डिया, 6 अक्टूबर, 1920.
- हाउस ऑफ कामंस की सेलेक्ट कमेटी की रिपोर्ट, 1871, बूशैंप : पूर्वोद्धृत, पृ0 44.
- शिरोल, सर बैलेंटाइन : इंडिया, 1926, पृ0 207. रजनी पाम दत्त, इंडिया टुडे, पृ0 339.
- सीतारमैय्या, पट्टाभि : दि हिस्ट्री ऑफ दि इंडियन नेशनल कांग्रेस, पृ0 384.
- नेहरू, जवाहरलाल : आटोबायोग्राफी, पृ0 86, रजनी पाम दत्त, इंडिया टुडे, पृ0 349.
- महात्मा गांधी : यंग इंडिया, 1919–22 पृ0 1019–22.
- गांधी, एम0 के0 : गांधीजीज करेस्पाण्डेन्स विथ दी गवर्नमेण्ट, 1942–44, अहमदाबाद, 1957.
- बोस, सुभाषचन्द्र : दि इंडियन स्ट्रगल, 1920–1934, लंदन, 1935.
- सोर्स मैटीरियल फॉर ए हिस्ट्री आफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इण्डिया : खण्ड 2 1885–1920, बम्बई, गवर्नमेंट सेंट्रल प्रेस, 1958.
- उपाध्याय, देवनाथ : बलिया में क्रान्ति और दमन (हिन्दी), इलाहाबाद,1946.
- चटर्जी, ए0 सी0 : इण्डियाज स्ट्रगल फार फ्रीडम, कलकत्ता, 1948.
- देसाई, ए0आर0: भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि (हिंदी), मैकमिलन, दिल्ली,
- 1976.
- मुखोपाध्याय, नालिनी मोहन द्वारा दिया गया उत्तर पश्चिम भारत में क्रांतिकारी कामों का विवरण, डॉ0 भूपेन्द्रनाथ दत्त : अप्रकाशित।
- चांदीवाला, व्रजकृष्ण: 'गांधी जी की दिल्ली डायरी', प्रथम खंड, दिल्ली स्मारक–निधि, 1969.
- रहबर, हंसराज : गांधी बेनकाब, दिल्ली, दिशा प्रकाशन 1979.